International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

बीजक में "सकारात्मक सोच" का विश्लेषण

देवलाल साहू शोदार्थी
डॉ. अजय शुक्ला शोध निर्देशक
कलिंगा विश्वविद्यालय कोटनी रायपुर छ.ग

Article Info

Volume 8, Issue 5

Page Number : 45-49

Publication Issue

September-October-2021

Article History

Accepted : 05 Sep 2021

Published : 10 Sep 2021

सद्गुरू कबीर साहब की वाणी का प्रामाणिक स्वरूप और कबीर पंथ का प्रतिनिधि ग्रंथ है– बीजक। कबीरपंथ में बीजक के प्रति सर्वमान्य रूप से पूज्य भावना समादृत है। यह कबीरपंथ का एक धार्मिक ग्रंथ भी और कबीर पंथ का विस्तार भी इसी का प्रतिफलन। सबसे पहले बीजक में ही मावन धर्म की स्थापना की गई है।

बीजक एक ऐसा ग्रंथ है जो किसी भी प्रकार के पक्षपात में कतई विश्वास नही करता और जिसके शब्दागंन में प्राणीमात्र एक बराबर जीवनशक्ति से परिपूर्ण हो विचरण करता है। मानव हित की इतनी सहज भावना और सत्य की इतनी पारदर्शी स्थापना अन्यत्र इतने स्पष्ट रूप से नहीं मिलती है।

बीजक की तुलना समुन्द्र से की जा सकती है। समुद्र को रत्नाकर इसलिए कहा जाता है कि उसमें अनेकानेक रत्न भरे हैं वह रत्नों का भण्डार है। आवश्यकता हैं उसमें अवगाहन कर उन रत्नों को बाहर निकालने की। उसमें जो जितनी गहराई जितनी देर तक अवगाहन करेगा, उसके हाथ में उतने ज्यादा रत्न आयेंगे और उससे समाज की सेवा की जा सकेगी।

बीजक बतावैं बित्त को, जो बित्त गुपुता होय।
ऐसे शब्द बतावै जीव को, बुझै बिरला कोय।। बीजक रमैनी साखी 37

अर्थात जिस प्रकार रत्नाकर के अन्दर रत्न भरे है वैसे ही बीजक के अन्दर तार्किक चिंतन सेवाभाव के ज्ञान, सकारात्मक सोच के दिशा निर्देश भरे हुए है।

बीजक में कबीर ने हृदय में सकारात्मक सोच की प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए अनेक पद लिखे है–

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

पोथी पढ़ी पढ़ी जुग गया, पंडित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

प्रेम पाट का चोलना, पहिर कबीरा नाच।
पानिप दीन्हों तासु को, जो तन मन बोले सॉच।। साखी 58

अर्थात प्रेम दुनिया को एकता के सूत्र में बान्धता है। जो बड़ी–बड़ी किताबे पढ़ने या माला धुमाने से प्राप्त नहीं होता बल्कि समय ही नष्ट होता है, और मन का संशय दूर नहीं होता। इसी कारण प्रेम का अनुसरण कर व्यक्ति से व्यक्ति और प्राणियों को व्यक्तियों से जोड़ा जा सकता है।

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सुप सुभाय।
सार–सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।।

नीर क्षीर निर्णय करे, हंस लक्ष सहिदान।
दया रूप थिर पद रहे, सो पारख पहिचान।।

जगत सार–असार वस्तुओं एवं बातों से भरा हुआ है, जिससे मन में संशय की स्थिति उत्पन्न होती है अतः सार चीजों का ग्रहण कर नकारात्मक वातो का परित्याग करना चाहिए।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।
कबीर सबते हम बुरे, हमते भल सब कोय।
जिन ऐसा कर बुझिया, मीत हमारा सोय।।

वर्तमान दौर में प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के ऊपर आरोप लगाकर अपने को महान बताने के होड़ लगा हुआ हैं, परन्तु सद्गुरू कबीर साहेब कहते हैं कि पहले भले–बुरे का पहचान करले यदि आप पहचान कर लेते है तो ये आपको महान बनाने में अद्भूत योगदान देगा।

गोधन गजधन बाजिधन, और रतन धन खानि।
जब आवै संतोष धन, सबधन धूरि समान
चाह गई चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।
जाको कछु नहिं चाहिए, सोई शाहनशाह।।

जगत के सारे धन, संतोष धन सामने धूल के समान है। जिनकी इच्छा (कामना) छूट गई है वही मनुष्य चिंता मुक्त एवं सम्राट है। अर्थात लोभ से बचने हेतु हमें प्रेरित कर रहा है।

तिनका कबहु न निन्दिये, जो पावन तर होय।
कबहु उड़ि ऑखन पड़े, तो पीर धनेरी होय।।

किसी भी स्थिति में इंसान को छोटा नहीं समझना चाहिए क्योंकि प्रत्येक इंसान का एक अपना महत्व होता है। पैर के नीचे रहने वाले धास को छोटा समझकर उखाड़ कर फेंक देते हैं जो हवा के संगति से उड़कर आपके ऑखों में पड़कर गहरी पीड़ा देता है। इसीलिए इन्सान–इन्सान में भेद मत करो, सबका सम्मान करना चाहिए।

सद्गुरू कबीर साहब जी लोगों को पुरूषार्थ करने हतु प्रेरित कहते है कि

मांगन मरण समान है, तोहि दई मैं सीख।
कहै कबीर समझाय के, मति मांगे कोई भीख।।

जो प्राणी भिक्षा मांगते है वह दूसरे प्राणी के निगाह से गिर जाते है।

1. **माटी कहे कुम्हार से, तु क्या रौंदे मोय।**
एक दिन ऐसा आयेगा, मैं रौंदूगी तोय।।

2. **राजपाट धन पाइके, क्यों करता अभिमान।**
पड़ोसी की जो दशा, भई सो अपनी जान।।

मिट्टी बर्तन बनाने वाले कुम्हार से कहती है तू क्या मुझे मसलेगा, एक ऐसा भी दिन आयेगा तब मैं तुम्हें मसल दूॅगी। यह बात बहुत ही ध्यान से समझने की है। जीवन में चाहे इंसान कितना बड़ा आदमी बन जाय अंत में उसे खाक या दफन होकर मिट्टी में ही मिल जाना है। इसलिए अहंकार का त्याग करना ही श्रेयकर है।

धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

सद्गुरू कबीर साहब जी कहते हैं कि संसार में हर चीज धीरे–धीरे पूरी होती है। माली बार–बार पौधे को सींचता है पर फल तभी आता है जब उसकी ऋतु आती है। अर्थात जीवन में हर चीज अपने समय पर होती है व्यर्थ की कोशिश और जिद् से कोई लाभ नहीं होता। इसलिए मेहनत करते रहो और धैर्य धारण करो मेहनत का फल मीठा ही होगा।

गाली से ही ऊपजै, कलह कष्ट और मीच।

हारि चलै सो सन्त है, लागि मरै सो नीच।।

गाली एक ऐसी चीज है जिसका उच्चारण करने से कलह और क्लेश बढ़ता है। लड़ने मरने पर लोग उतारू हो जाते है। अतः इससे बचकर रहने में भलाई है। इससे हारकर जो चलता है वही ज्ञानवान हैं (हारकर चलने का अर्थ है दूर रहना) किन्तु जो गाली से लगाव रखता है वह अज्ञानी झगड़े में पड़कर अत्यधिक दुःख पाता है।

जंत्र मंत्र सब झूठ है, मति भरमों जग कोय।

सार शब्द जाने बिना, कागा हंस न होय।।

जंत्र मंत्र का आडम्बर सब झूठ है, अन्धविश्वास है, इसके चक्कर में पड़कर अपना जीवन व्यर्थ न गॅवाये। गूढ़ ज्ञान के बिना कौआ कदापिहंस नही बन सकता। अर्थात अंधविश्वास को त्यागने पर ही ज्ञान की प्राप्ति हो सकता है।

मन स्वारथी आप रस, विषय लहर फहराय।

मन के चलाये तन चले, जाते सरबस जाय।।

मन की चंचलता का कारण है विषयासक्ति और यह मन विषय–रस का बड़ा स्वार्थी है। इसमें हर क्षण विषय की लहरें उठती रहती हैं। यह मन बराबर किसी–न–किसी विषय का चिंतन करता रहता है। विषय–चिंतन से मन विचलित हो जाता है मन के विचलित होने से शरीर विचलित और चंचल हो जाता है जिससे मनुष्य का सर्वस्व नष्ट हो जाता है।

अतः मन को नियंत्रण कर सद्मार्ग में लगाना चाहिए।

करू बहियां बल आपनी, छाड़ बिरानी आस।

जाके ऑगन नदिया बहै, सो कस मरै पियास।।

जो तू चाहै मूझको, छॉड़ सकल की आस।

मुझ ही ऐसा होय रहो, सब सुख तेरे पास।।

अपने आत्म बल पर विश्वास कर एवं दूसरे की भरोसा त्याग कर कार्य करने हेतु प्रेरित करता है।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि कबीर साहित्य नकारात्मक सोच को दूर कर सकारात्मक सोच की ओर मन को लगाता है एवं ज्ञानवर्धन में सहयोग करता है।

शोध साहित्य ग्रंथ

1. विवेक प्रकाशिनी बीजक टीका – साध्वी ज्ञानानंद प्रकाशन – श्री कबीर ज्ञान प्रकाशन केन्द्र संत कबीर ज्ञान मार्ग सिहोडीह, सिरसिया गिरिडीह झारखंड
2. सद्गुरू कबीर और पारख सिद्धांत – धर्मेन्द्र दास प्रकाशन – पारख संस्थान संत कबीर मार्ग, प्रीतम नगर, इलाहाबाद।
3. सद्गुरू कबीर ज्ञान पयोनिधि – आचार्य गृन्धमुनि नाम प्रकाशन – सद्गुरू कबीर साहब धर्मदास वंशगद्दी दामाखेड़ा
4. कबीर के दोहे – विवेक निशु प्रकाशन – भाषा भवन लक्ष्मीनारायण धर्मशाल वाली गली हालनगंज, कच्ची सड़क , मथुरा
5. स्वभाव का सुधार – अभिलाष दास प्रकाशन – कबीर पारख संस्थान संत कबीर मार्ग, प्रीतम नगर, इलाहाबाद
6. कबीर बीजक के रत्न – धर्मेन्द्र दास प्रकाशन – कबीर पारख संस्थान संत कबीर मार्ग, प्रीतम नगर, इलाहाबाद
7. कबीर : एक गहरा चिंतन – आत्माप्रसाद अस्थाना प्रकाशन – कबीर पारख संस्थान संत कबीर मार्ग, प्रीतम नगर, इलाहाबाद